18 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा बाप को देखकर मुश्किल को सहज करने का अनुभव

➢➢ मैं बाप समान बनने का अनुभव कर रही हूँ..

➳ _ ➳ अमृतवेले अमृत बरसाते हुए सामने खड़े हैं बापदादा

→ अपने गुणों को ट्रान्सफर कर

■ मुझे सर्वगुण सम्पन्न बना रहे हैं..

→ अपनी शक्तियों को प्रवाहित कर

■ मास्टर सर्वशक्तिवान बना रहे हैं..

→ सारे खजाने, वरदानों से

■ विश्व का मालिक बना रहे हैं..

→ अपने श्रेष्ठ भाग्य पर नाज करती

■ 'वाह मेरा बाबा वाह' का गीत गा रही हूँ..

→ 'वाह मेरे बच्चे, वाह' का गीत गाते हुए मेरे बाबा..

➳ _ ➳ मैं अपनी चेकिंग करती हूँ- बाप समान कहाँ तक बनी हूँ..

→ बापदादा सामने एग्जाम्पल हैं..

→ एक-एक गुण, एक-एक शक्ति को

■ सामने रखते हुए चेकिंग कर रही हूँ..

→ कितने परसेन्ट में गुण व शक्ति स्वरूप बनी हूँ?

→ जिस गुण वा शक्ति की कमी है

■ उसको धारण कर रही हूँ..

→ निराकारी रूप में और साकार रूप में

■ दोनों ही रूप में बाप को देख

■ फालो फादर कर रही हूँ..

→ बाप समान बन रही हूँ..

➢➢ मैं आत्मा सदा स्मृति स्वरुप हूँ..

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा इसी स्मृति में रहती हूँ-

→ मैं सर्व शक्तिवान की संतान

■ मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ..

→ प्यारे बाबा ने मुझे पूजन योग्य बनाया..

■ मैं पूज्य आत्मा हूँ..

■ मैं देव आत्मा हूँ..

■ मैं महान आत्मा हूँ..

→ भक्त आत्माएं बाप के साथ-साथ

- मेरी भी महिमा गाते हैं..

→ आज भी भक्त मुश्किलों को सहज बनाने के लिए

- बाप या मुझ देव आत्मा को ही पुकारते हैं..

→ बाबा ने मुझे सहज राजयोग सिखाकर

- हर मुश्किल को आसान बना दिया है..

➢➢ बाप को देख हर मुश्किल को सहज बना रही हूँ...

➳ _ ➳ कोई भी मुश्किल आये मैं आत्मा

→ सिर्फ बाप को ही देखती हूँ..

- बातों में नहीं जाती हूँ..

→ जैसे बाप बिन्दु है वैसे ही

- हर बात को बिन्दु लगा देती हूँ..

→ बातें हैं वृक्ष, और बाप है बीज..

→ विस्तार वाले वृक्ष को हाथ लगाकर

- बाप को किनारा नहीं करती..

→ बातों रूपी विस्तार के जाल में फंसने के बजाए

- बिंदु में समा जाती हूँ..

→ सदा अपने तीसरे नेत्र को खुला रख

- हर पल अटेंशन रखती हूँ..

→ रंग-बिरंगी बातों के विस्तार में आकर्षित ना होकर

- रंग-बिरंगी परमात्म किरणों के नीचे बैठ जाती हूँ..

→ सदा अपनी बुद्धि को बिजी रखती हूँ..

→ विश्व कल्याणकारी की स्टेज में स्थित होकर

- विश्व सेवा में बिजी रहती हूँ..

→ मेरी हर चाहना पूरी हो रही है..

- हर मुश्किल को सहज पार कर रही हूँ..
- सदा दिलखुश मिठाई खा रही हूँ..
- सदा सहजयोग का अनुभव कर रही हूँ..